International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आधुनिकीकरण का समाज पर प्रभाव

(डॉ. योगमाया उपाध्याय)

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने वैज्ञानिक सोच के आगमन के बाद से मनुष्य के जीवन और मानव प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। मनुष्य सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक सौंदर्य और आध्यात्मिक जीवन के क्षेत्रों में तर्क और व्यवहार के माध्यम से विचार और व्यवहार के नए दृष्टिकोण को सामने ला रहा हैं। सामाजिक अलगाव के कारण महिलाएं विकास के कई कई लाभों से वचिंत भी सामान्य रूप से मानव जागरूकता और विशेष रूप से लोकतंत्र के आगमन के साथ महिलाओं ने एक नया सामाजिक दर्जा प्राप्त किया। यह सब शिक्षा का परिणाम है। इसके अलावा नारी शिक्षा पर अमिट छाप आधुनिकीकरण की प्रक्रिया दोनो को महिलाओं के विकास के लिए जिम्मेदार माना गया है। देश की नीतियों और कार्यक्रमों ने हमारे सामाजिक जीवन की प्रक्रिया में परिवर्तनों पर सकरात्मक प्रभाव डाला हैं। आधुनिक शिक्षा ने जीवन के प्रति नए मूल्यों मानदंडो, आशाओं और आकांक्षाओं को जन्म दिया हैं। इस परिवर्तन ने देश के कोने–कोने में व्याप्त सामाजिक परिवर्तन की शक्तियों को उत्पन्न किया है। आदिवासी क्षेत्र जो अंग्रेजों के दौरान जीवन की मुख्य धारा से बाहर रहे, इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण की सामान्य प्रवृत्ति से अवगत कराया गया हैं और अब उनको राष्ट्रीय जीवन की प्रगति पर लाया गया है।

आधुनिकीकरण की अवधारणा, लंबे समय से एक सार्वभौमिक परिभाषा और विश्लेषण के उपयुक्त स्तर पर सहमति की कमी से ग्रस्त हैं। यह शब्द सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया पर लागू होता है, जिससे कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों से सामान्य विशेषताओं का अधिग्रहण करते है , (डेविड सिल्स 1972) इसका उपयोग तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्षता के विकास और एक ऐसी प्रक्रिया के लिए किया जाता है जिसके द्वारा मनुष्य को अत्याचारी शासन कुरीतियों से छुटकारा मिल जाए , जैसे कि अंधविश्वास से यह अर्थशास्त्र और राजनीति में सामाजिक व्यवहार में व्यक्तिगत दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तनों से भी संबंधित हैं। शहरीकरण कैसे होता है, कैसे सामाजिक संरचना में परिवर्तन होता है शैक्षिक प्रणाली कैसे परिवर्तित होती है और औद्योगीकरण कैसे होता है। वास्तव में आधुनिकीकरण का अर्थ वर्तमान समय के अनुकूल होना है।

पुरानी आदतों रीति–रिवाजों को व्यागते हुए परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार पंरपराओं और दृष्टिकोंण में परिवर्तन होता हैं। आज जो माना जाता है वह कुछ वर्षो के बाद

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शायद वैसा न हो। कुल मिलाकर यह एक के बाद एक चरण में हासिल की जाने वाली एक सतत् प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का समाज में प्रचार एंव प्रसार होता है जिससे समाज में व्यक्तियों के स्तर में सुधार होता है और समाज अच्छाई और विकास की ओर बढ़ता है।

अलतास–''आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का समाज में प्रचार एवं प्रसार होता हैं जिससे समाज में व्यक्तियों के स्तर में सुधार होता है और समाज अच्छाई और विकास की ओर बढ़ता है।'

डेनियल–''आधुनिकीकरण वो प्रक्रिया है जिससे ऐतिहासिक रूप से उत्पन्न संस्थाएं तेजी से बदलती हुई नई जिम्मेदारियों के साथ अनुकूलित होती है जिसमें वैज्ञानिक प्रगति से जुड़ी अपने परिवेश पर नियंत्रण की क्षमता वाले मनुष्य के ज्ञान में अभूतपूर्व वृध्दि दिखाई देती है।''

''आधुनिकीकरण वो सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता हैं। जो व्यापक रूप से साक्षा राय होती हैं। धारणा का तात्पर्य ''वृध्दि'' शब्द में निहित परिवर्तन से है। इसे मानव समस्याओं के समाधान के लिए विज्ञान और प्रोद्योगिकी के अनुप्रयोग के रूप में संक्षेप में व्याख्यायित किया जा सकता इस तरह के परिवर्तन निश्चित रूप से सामाजिक संरचना के एक व्यापक तंत्र को प्रभावित करते है जो राजनितिक , सांस्कृतिक , आर्थिक और जनसांख्कीय और यहाँ तक कि व्यक्तित्व में परिवर्तन तक के क्षेत्र में होते है।

कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि आधुनिकीकरण की किसी भी परिभाषा का प्रारंभिक बिंदु समाजों की प्रकृति में नही हैं बल्कि लोगों की विशेषताओं में हैं जो उस समाज का हिस्सा होते हैं (टोरस्टन एंड हुसैन 1995 इंकेल्स एंड स्मिथ 1974) इस प्रकार यह लोगो का स्वभाव और मानसिक रवैया है जो संगठन के उच्च स्तर को बदलने के लिए एक प्रकार की पूर्व कन्डीशन हैं। इंकेल्स एंड स्मिथ (1974) ने अपने प्रसिध्द शोध ''लीकमिंग मॉडर्न'' में व्यक्तिगत आधुनिकता में अनुभवजन्य सत्यापन का एक व्यवस्थित अन्वेषण दिया। इंकेल्स और उनके सहकर्मियों (1974) ने ''आधुनिक'' शब्द का इस्तेमाल व्यक्तिगत कामकाज की एक विधा के रूप में किया। छः विकासशील देशों अर्जेटीना , चिली , भारत , इजराइल , नाइजीरिया और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में से प्रत्येक में लगभग 1000 श्रमिकों पर आधारित इंकेल्स और स्मिथ की शोध रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक समाजों में पुरूषों द्वारा साक्षा किए गए कुछ दृष्टिकोण है जिसमें सांस्कृतिक अंतर शामिल नहीं हैं। आधुनिक व्यक्ति के संदर्भ में इलेक्स इनकेल्स और स्मिथ द्वारा दिए गए दृष्टिकोण औंर व्यवहार पैर्टन की एक श्रृंखला की रूपरेखा इस प्रकार हैं :–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- नए विचारों और नए तरीकों से स्वीकार करने की तत्परता।
- राय व्यक्त करने की तत्परता।
- एक सकरात्मक समय बोध जो पुरूषों से अतीत की तुलना में भविष्य और वर्तमान में अधिक रूचि रखता हैं।
- स्मय की पाबंदी की बेहतर समक्ष।
- योजना , संगठन और दक्षता के लिए एक बड़ी चिंता।
- दुनिया से सीखने योग्य देखने की प्रवृत्ति।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विश्वास और
- समान वितरणात्मक न्याय में विश्वास।

टी सी एस एन ईसेनस्टेड (1969) के अनुसार ऐतिहासिक आधुनिकीकरण उस प्रकार की सामाजिक आर्थिक और राजनितिक व्यवस्थाओं के प्रति परिवर्तन की प्रक्रिया है जो पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी में विकसित हुई है और 19वीं और 20वीं शताब्दी में दक्षिण अमेरिका , एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीपों के साथ अन्य यूरोपीय देशों में फैल गई हैं। लर्नर (1962 की अवधारणा मुख्य रूप से पश्चिमीकरण पर आधारित है। उनके अनुसार ''आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्थाओं साथ–साथ निजी आकांक्षाओं को छूती हुई प्रत्यक्षवादी भावना शामिल है।''

आधुनिक भारत के संदर्भ में श्रीनिवास ने कहा कि आधुनिकीकरण उन्नत ''मिडिया एक्सपोजर'' द्वारा चिन्हित है, जो व्यापक आर्थिक भागीदारी (प्रति व्यक्ति आय) राजनीतिक भागीदारी (मतदान) और सामाजिक गतिशीलता में हुई वृध्दि से जुड़ा हैं। योगेन्द्र सिंह (1973) द्वारा दिखाए गए एक मॉडल के माध्यम से बताया कि समाज आधुनिकता की परम्परा से बदलता है और इस तरह छोटी–छोटी पंरपरा धीरे–धीरे महान पंरपरा में बदल जाती हैं।

उपरोक्त चर्चो से यह स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण की अवधारणा का पता लगाने की आवश्यकता हैं। कुछ हद तक आधुनिकीकरण पर शोध साहित्य में कई सामाजिक विज्ञान विषयों के विशिष्ट सैध्दतिक लेख देखना संभव है , जो सामाजिक परिवर्तन के परिणामों पर आधारित हैं। सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने व्यक्तिगत स्तर पर आधुनिकता की संकल्पना की है जिसमें कुछ सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित दृष्टिकोण क्रिया व्यवहार पर जोर दिया गया है। व्यक्तियों के व्यवहार और व्यवहारिक क्रिया प्रवृत्तियों में परिवर्तन देखकर अवधारणा से परिचलित किया जा सकता हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हांलाकि अलग–अलग वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण अलग–अलग है , जिन्हें संक्षेप में निम्न क्षेत्रों से प्रस्तुत किया जा सकता है।

- आधुनिकीकरण को किसी के आंतरिक गुणों के संदर्भ में माना जाता है। जैसे कि किसी के व्यवहार में तर्क संगतता , निष्पक्षता , व्यापक सोच और लचीलेपन की वृध्दि।
- एक समाजशास्त्री के लिए आधुनिकीकरण विभेदीकरण की प्रक्रिया है जो आधुनिक समाजों की विशेषता हैं।
- एक अर्थशास्त्री के लिए आधुनिकीकरण का अर्थ आर्थिक विकास और भौतिक उन्नति से हैं।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अनुप्रयोग के संबंध में यह आधुनिकी समाज के तकनीकी उन्नत मॉडलो को अनिच्छा से पश्चिमीकरण के साथ संदर्भित करता हैं।

इसके अलावा आधुनिकीकरण की अवधारणा में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रतीत होती है।

- पुराने से नए में बदलाव।
- परिवर्तन के लिए समायोजन।
- परिवर्तन की प्रक्रिया के प्रति गतिशील और बाहरी दृष्टिकोण।
- कौशल के लिए क्षमताओं का विकास।
- परिवर्तन की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए व्यवहार
- आर्थिक और भौतिक प्रगति के लिए नए तकनीकी मॉडल का विकास।

शिक्षा जिसे आधुनिक समाज में कौशल दृष्टिकोण और मूल्य प्रदान करने वाले एक संगठित प्रयास के रूप में देखा जाता है और जो समाज में रहने योग्य बनाने की प्रथम सीढ़ी है, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फ्रेडरिक हार्बिन्सन और चार्लस ए. मेयर्स (1980) द्वारा दिया गया बयान शिक्षा वह कुंजी हैं जो आधुनिकता के द्वार को खोलती है और सबध्द क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा दिया हैं। शिक्षा के क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि आधुनिकीकरण का मतलब शिक्षा , शिक्षित और कुशल नागरिकों का निर्माण करके उन्हें समाज में फैलाना है जिससे वह समाज में आधुनिकीकरण को बड़े स्तर पर विकसित कर सके।

स्वतंत्र भारत में समाज के स्वरूप औंर उसके आदर्शों में एक और परिवर्तन आया। शिक्षा को राष्ट्र के सर्वागीण विकास को प्राप्त करने का उदेश्य दिया गया था। भारत में शिक्षा आधुनिक भारत की जरूरतों और उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए उपयोगिता और आर्दशवाद के बीच एक संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है। प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण आज का सामाजिक जीवन से बहुत अलग हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हाल के उल्लेखनीय विकासों ने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मानवीय धारणा और मूल्यों में परिवर्तन किया है। नवीनतन हाल ही में शिक्षा को दिए गए उद्देश्यों में से एक क्षमता विकसित करना और तकनीकी व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना हैं। हाई–टेक विकास के अलावा आर्थिक परिवर्तनों में भी सामाजिक जीवन को काफी प्रभावित किया है। एस. एन. ईसेनस्टेड (1966) ने ठीक कहा है कि आधुनिक समाजों में शैक्षणिक संस्थानों में विशेषतओं के विश्लेषण के लिए यह शायद सबसे अच्छा प्रारंभिक बिंदु है जो कि आधुनिकता की मांग के साथ विकसित होने वाली शैक्षिक सेवाओं की मांग और आपूर्ति के अनुरूप हो।

योगेन्द्र सिंह के शब्दों में शिक्षा भारत में आधुनिकीकरण के सबसे प्रभावशाली साधनों में से एक रही हैं। इसने लोगों की राष्ट्रवाद , उदारवाद और स्वतंत्रता के लिए भावनाओं को प्रेरित किया है। यह अकेले ही प्रबुध्द बुध्दिजीवियों के विकास के लिए जिम्मेदार रही हैं। जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिए एक आंदोलन से आगे बढ़ावा बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधारों के लिए एक अथक संघर्ष भी किया। शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आधुनिकीकरण है आधुनिकीकरण एक व्यापक अवधारणा है जिसका उद्देश्य समाज में गहन गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों को धारण करना उनका वर्णन करना और उनका मूल्यांकन करना है।

आधुनिकीकरण लाने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका के बारे में पश्चिम और भारत में शोध किए गए हैं। उनमें से अधिकांश ने दोनों के बीच सकारात्मक संबंध दिखाया हैं। हालांकि सॉन्डर्स (सॉन्डर्स जॉन वी.डी.1969) ने ब्राजील में शिक्षा और आधुनिकीकरण पर अपने अध्ययन में ज्ञात किया है कि यह आधुनिकता को कमजोर करता हैं। उन्होनें टिप्पणी में ''ब्राजील के स्कूल में विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर जहां व्यक्तित्व विकास करने के बजाय आधुनिकीकरण के लिए जोर देते है और जो समाज के नवप्रवर्तक को कमजोर करता है।'' लर्नर ने अपने शोध कार्य में ''पारंपरिक समाज के पारित होने पर जोर दिया कि साक्षरता आधुनिकीकरण प्रक्रिया में अंतर्निहित बुनियादी व्यक्तिगत कौशल है और जो प्रतिभागी समाज को विकसित करती है। तकनीकी और सामाजिक राजनीतिक विन्यास के कारण महिलाओं की धारणाओं में बदलाव की भूमिकाओं के संबंध शिक्षा के क्षेत्र ने महिलाओं के लिए नए आयाम और रूपरेखा प्रदान की हैं। विभिन्न विषयों के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लेकर महिलाओं के अध्ययन को बढ़ावा दिया जा रहा हैं और महिला विकास के सक्रिय कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए शैक्षणिक संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा हैं।

भारत की स्वतंत्राओं के पूर्व की अवधि के दौरान समाज में महिलाओं की सामाजिक अक्षमताओं को दूर करने की आवश्यकता पर लोगों के मन में जागरूकता और चेतना जगाई गई थी महिला संगठन मध्यवर्गीय शहरी महिलाओं की जरूरतों और मुद्दो का प्रतिनिधित्व करने और आवाज उठाने से उनके लिए शिक्षा के द्वार खोले गए थे। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से महिलाओं की गतिशीलता में वृध्दि हुई। आधुनिकीकरण की जटिल प्रक्रिया ने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विभिन्न अंशों में महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया हैं। इस अवधि में महिलाओं ने अपने तक सीमित क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में अधिक से अधिक आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़े होने की आश्यकता महसूस की।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान दो प्रमुख आंदोलन हुए जिन्होंने महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया ये थे उन्नीसवीं सदीं में सामाजिक सुधार आंदोलन और बीसवीं सदीं का राष्ट्रीय आंदोलन। ब्रिटिश शासकों के उदार दृष्टिकोण और मूल्यों से प्रभावित होकर समाज सुधारकों ने लिंग समानता की वकालत करने की कोशिश करके महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण को बदलने के मदद की वह गांधीवाद चरण के दौरान राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं ने खुद को समूहों में संगठित किया और जुलुस में शामिल होकर पुलिस फायरिंग का सामना किया और वे जेल जाने के लिए भी तैयार भी थे (संजय केतन जेना 1993)।

भारत में 19वीं शताब्दी से जब समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति के खिलाफ पहली आवाज उठाई गई , समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा को उच्च प्राथमिकता दी। 1949 में कलकत्ता में बेक्यून स्कूल की स्थापना की गई औंर कुछ स्वदेशी प्रयासों के साथ गुजरात और महाराष्ट्र में इसी अवधि के दौरान लड़कियों के लिए स्कूलों की स्थापना से महिलाओं से शिक्षा की स्वीकृति की दिशा में पहला कदम उठाया गया था (देसाई राय ,1987) हांलाकि उदारवादी सुधारकों ने लड़कियों के लिए शिक्षा के मूल्य और इसकी सामाग्री को लड़कियों के स्तर के लिए मान्यता दी थी। शिक्षित परिवार में महिलाओं की भूमिका उनकी सीमित धारणा से बहुत अधिक निर्धारित थी यह विश्वास था कि समाज के परिवर्तन के विशाल कार्य में जिसमें शिक्षित मध्यम वर्ग के पुरूष शामिल थे , यदि महिलाओं को शिक्षा दी जाती है तो न केवल समाज में हो रहें परिवर्तनों से सराहना की जाएगी बल्कि समाज इस परिवर्तन की प्रक्रिया के तेज करने में भी सहयोग करेगा। उन्होनें महिलाओं की पारंपरिक पत्नी , माँ की भूमिका में कभी भी बदलाव की परिकल्पना नही की हांलाकि यह समाज सुधारक लड़कियों को शिक्षा देने के मूल्य को स्वीकार कराने का माहौल तैयार करने में सफल रहे। (नतेसेन एन.डी.य कर्वे डी. के , 1936 रानाडे एम.जी. 1902 , मजूमदार , वीना , 1985)

समाज सुधारको द्वारा की गई उत्कृष्ट दलालों के बावजूद महिला शिक्षा का प्रसार व्यापक नहीं था राष्ट्रवादी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और ऐसे संगठनों का निर्माण किया जहाँ शिक्षा की आवश्यकता पर लगातार जोर दिया गया बेशक इस चरण के दौरान भी महिलाओं की धारणा में ज्यादा बदलाव नहीं आया था लेकिन फिर भी धीरे–धीरे यह महसूस किया जा रहा था कि शिक्षा उनकी व्यापक भागीदारी के लिए आवश्यक अंग है। पहले की अवधि तुलना में इस चरण के दौरान अधिक महिलाएं स्कूलों और कॉलेजों में जाती थी लेकिन इनमें कुछ प्रगति के बावजूद महिला शिक्षा की वृध्दि बहुत धीमी रही थी। आजादी की पूर्व संध्या पर केवल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आठ प्रतिशत महिलाएं ही साक्षर थे। शिक्षा महिलाओं की स्थिति के पूर्व प्रचार और सुधार का आधार है और इस दशक के तीन उप विषयों रोजगार स्वास्थ्य और शिक्षा से अटूट रूप से जुड़े हुए है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पुरूषों के लिए द्वारा जिम्मेदारी साक्षा करने की आवश्यकता होती हैं।

समकालीन महिलाओं तक राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को कवर करने वाले व्यापक बदलाव के लिए निम्नलिखित आयामों पर ध्यान देने की आवश्यकता है :–

- प्राचीन भारत में मातृत्व की विचारधारा।
- दार्शनिकों और समाज सुधारकों द्वारा कल्पना की गई महिलाओं की स्थिति।
- आधुनिकीकरण और महिलाएं।

समाजशास्त्र विभाग कुवेम्पु विश्वविद्यालय (1992) ''महिला और विकास आलोचनात्मक पहलु'' मुद्दो पर दो दिवसीय संगोष्ठी में महिलाओं के विकास हेतु निम्नलिखित पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

(1) महिला और विकास महत्वपूर्ण मुद्दे।
(2) महिला और शक्ति।
(3) महिलाएं और अर्थव्यवस्था।
(4) महिला और जनसंचार माध्यम।
(5) महिला और शिक्षा।
(6) महिला और सार्वजनिक स्वास्थ्य।

महिलाओं के मामले में यह सच में कहा है कि 'पालने' को हिलाने वाला हाथ दुनिया पर राज कर सकता है।'' नारी की डोरी में वह कांतिकारी शक्ति छिपी है जो धरती पर उन्नत स्थापित कर सकती हैं। वर्तमान में नागालैंड में आओं महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर एक बोधगम्य ऊंचाई प्राप्त कर चुका हैं। वहां महिलाओं ने सभी गतिविधियों में भाग लिया है और महिलाओं ने वर्तमान की भूमि बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। महिलाऐ शिक्षक , पादरी , महिला पुलिस , डॉक्टर , नर्स सिविल सेवाओं में प्रशासक , सामाजिक कार्यकर्ता व्यावसायिक उद्यमी और अन्य सभी कार्यो में कर रही है। इस प्रकार महिलाओं की शिक्षा ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला हैं। आओं समुदाय में आधुनिकता के मामले में पुरूषों में महिलाओं की श्रेष्ठता पर ध्यान देना आश्चर्यजनक हैं। हॉलांकि नागा परम्परागत रूप से पितृसत्तात्मक सामज है फिर भी महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के लिए समान दर्जा और अवसर दिये जाते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ सूची

1. Rana Singh Banaras : Making of India's Heritage city , Cambridge schotars publishing 2009.
2. लर्नर डैनियल ''द पासिंग ऑफ ए ट्रेडिशनल सोसायटी'' द फ्री प्रेस न्यूयार्क कोलियर मैक मिलन लिमिटेड लंदन , 1968.
3. सौन्डर्स जॉन वी.डी. ब्राजील में शिक्षा और आधुनिकीकरण , लुइसाना स्टेट यूनिवर्सिटी 1969.
4. बुच.एम.बी. शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण 1983–88 खंड 2 , महिला शिक्षा में अनुसंधान एक रूझान रिपोर्ट.
5. जेना संजय केतनः ''कामकाजी महिलाएं और आधुनिकीकरण'' आशीष पढिलशिंग हाउस , नई दिल्ली 110026.